विचार बिन्दु

मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उदार बनने से पहले त्यागी बने। –डिकेंस

राजस्थानी भाषा: मान्यता की चुनौतियां और राजस्थान सरकार के प्रयास

राजस्थानी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, अपितु राजस्थान की सात सौ साल पुरानी वीर गाथाओं, भक्ति रस और सांस्कृतिक विरासत की जीवित संवाहिका है। यह उस माटी की बोली है, जिसने 'पद्मावत' से लेकर 'ढोला मारू रा दूहा' तक और मीरां के पदों से लेकर कन्हैयालाल सेठिया की 'पाथल और पीथल' तक विश्व साहित्य को अनमोल रत्न दिए हैं। आज जब हम आधुनिकता के दौर में अपनी जड़ों को तलाशते हैं, तो राजस्थानी भाषा एक सुदृढ़ सेतु के रूप में खड़ी दिखाई देती है, जो राजस्थानी अस्मिता, इतिहास और भावनात्मक भावनाओं को जोड़ती है। विडंबना यह है कि करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाने वाली और समृद्ध व्याकरण और साहित्य रखने वाली यह भाषा आज भी भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में अपनी जगह बनाने के लिए संघर्षरत है।

राजस्थानी की जड़ें वैदिक संस्कृत और अपभ्रंश तक जाती हैं। भाषाविदों के अनुसार, इसका उद्भव 'मरुगुर्जर' अपभ्रंश से हुआ है, जो इसकी ऐतिहासिक गहराई और भारतीय भाषापरंपरा के साथ गहरे तादात्म्य को दर्शाता है। आज राजस्थानी की अनेक बोलियां मारवाड़ी, मेवाती, ढूंढाड़ी, हाड़ौती और मालवी सहित–पूरे प्रदेश में अपनी छटा बिखेर रही हैं। साहित्य अकादमी ने पहले ही राजस्थानी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दे दी थी, लेकिन राजनीतिक और संवैधानिक स्तर पर उसे वह सम्मान नहीं मिल पाया, जिसका यह हकदार है। यही अंतर आज भी राजस्थानी भाषी समुदाय के लिए एक गहरा विरोधाभास और अपमान का एहसास बना हुआ है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में राजस्थानी को शामिल करने की मांग दशकों पुरानी है। 25 अगस्त 2003 को राजस्थान विधानसभा ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया था, जिसमें केंद्र सरकार से राजस्थानी को आठवीं अनुसूची में जोड़ने का आग्रह किया गया था। यह दस्तावेज़ आज भी मान्यता की मांग का सबसे मजबूत कानूनी और नैतिक आधार माना जाता है, पर यह अभी भी केंद्रीय स्तर पर अटका हुआ है। गृह मंत्रालय द्वारा गठित 'सीताकांत महापात्र समिति' ने भी राजस्थानी को मान्यता देने के पक्ष में सकारात्मक सिफारिशें की हैं, लेकिन अंतिम निर्णय अभी तक संसदीय स्तर पर अधूरा है। जब तक किसी भाषा को संवैधानिक संरक्षण नहीं मिलता, तब तक उसका सरकारी कामकाज, औपचारिक शिक्षा और नौकरशाही में प्रयोग सीमित रहता है, और राजस्थानी भी इसी दुविधा में जी रही है।

राजस्थानी भाषा की मान्यता हेतु जन सेवकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और साहित्यकारों ने सड़क से लेकर संसद तक आवाज उठाई है। राजस्थान के सांसदों ने समय–समय पर लोकसभा और राज्यसभा में नियम 377 तथा शून्यकाल के दौरान राजस्थानी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की पुरजोर मांग की है। राजस्थानी मोती डूंगरी' जैसे संगठनों और विजयदान देथा, कन्हैयालाल सेठिया जैसे साहित्यकारों के मार्गदर्शन में जनसेवकों ने राजस्थानी मान्यता संघर्ष समिति जैसी संरचनाएं बनाकर बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया है। यह आंदोलन यह तर्क देता है कि राजस्थानी केवल एक बोली नहीं, बल्कि लगभग 8 करोड़ लोगों की सांस्कृतिक, भावनात्मक और सामाजिक पहचान है।

राजस्थान सरकार के दृष्टिकोण से देखें तो राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता की मांग को राज्य स्तर पर गंभीरता से उठाया गया है। 25 अगस्त 2003 का विधानसभा प्रस्ताव एक ऐतिहासिक कदम है, जिसके बाद राज्य सरकार धीरे–धीरे इसके संरक्षण और संवर्धन की दिशा में कदम बढ़ा रही है। 'राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर' की स्थापना एक मील का पत्थर साबित हुई है, जो राजस्थानी साहित्यकारों को प्रोत्साहित करती है, विभिन्न पुरस्कार देती है और पुस्तक प्रकाशनों के माध्यम से भाषा के मानक स्वरूप को संरक्षित रखने का काम कर रही है। इस अकादमी द्वारा संपादित पत्रिकाएं और शोध लेख राजस्थानी को आधुनिक शोध और नवीन पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बनाते हैं। इसी कड़ी में 'जागती जोत' जैसी पत्रिकाओं ने राजस्थानी लेखन को एक नई दिशा, नया आत्मविश्वास और सार्वजनिक मंच दिया है, जिसने युवा लेखकों और शोधार्थियों को भाषा से जुड़ने के लिए प्रेरित किया है।

सबसे पहले यह मानना होगा कि बोलियां एक ही भाषापरिवार के भीतर अलग-अलग रंग स्वरूप हैं, न कि अलग-अलग भाषाएं। ऐसे में यदि राजस्थानी के लिए एक मानक राजस्थानी बनाई जाए, जो विभिन्न बोलियों के बीच अधिकतम आम स्थान समय के लिए स्वीकृत रूप में उपयोग की जाए, तो भाषाविविधता स्वतः ही संकुलित होने लगेगी।

शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप मातृभाषाआधारित शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने की दिशा में काम किया है। राजस्थान के कई सरकारी विद्यालयों में स्थानीय बोलियों में शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है, ताकि ग्रामीण परिवेश के बच्चे अपनी मातृभाषा में अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझ सकें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और विभिन्न विश्वविद्यालयों में राजस्थानी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है, जिससे युवा पीढ़ी अपनी भाषाई विरासत से जुड़ी रह सके।

राजस्थानी भाषा की बोलियां राजस्थानी विरासत की जीवित शाखाएं हैं। इसका उद्देश्य यह होना चाहिए कि अलग–अलग बोलियों के बीच जो वास्तविक भेद हैं, उन्हें व्यवस्थित रूप से संकुलित करके एक मानक राजस्थानी के रूप में आगे बढ़ाया जाए, जिसके भीतर बोलियां अपनी विशिष्टता बनाए रखें, पर भाषास्तर पर संवाद और शिक्षा के लिए एक सामान्य आधार खड़ा हो। राजस्थानी भाषा की बोलियां मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, शेखावाटी, बागड़ी, मालवी आदि की विविधता को नष्ट करने की बजाय उसे संरक्षित करते हुए मानकीकरण और समन्वय की दिशा में काम किया जा सकता है।

सबसे पहले यह मानना होगा कि बोलियां एक ही भाषापरिवार के भीतर अलग–अलग रंग स्वरूप हैं, न कि अलग–अलग भाषाएं। ऐसे में यदि राजस्थानी के लिए एक मानक राजस्थानी बनाई जाए, जो विभिन्न बोलियों के बीच अधिकतम आम स्थान समय के लिए स्वीकृत रूप में उपयोग की जाए, तो भाषा विविधता स्वतः ही संकुलित होने लगेगी। इसके लिए भाषाविदों, शोधकर्ताओं और साहित्यकारों की तकनीकी समिति आवश्यक है, जो राजस्थानी के उन शब्दों, व्याकरणिक रूपों और वाक्य संरचनाओं का चुनाव करे जो विभिन्न बोलियों में सबसे अधिक आम और व्यावहारिक हों। इस मानक रूप को एजुकेशन, प्रशासन, मीडिया और डिजिटल डॉक्यूमेंट्स में व्यवस्थित रूप से अपनाने से युवा जन को एक सामान्य भाषाई आधार मिलेगा, लेकिन उनकी स्थानीय बोली से उनका जुड़ाव टूटा बिल्कुल नहीं होगा।

दूसरे, राजस्थानी के लिए एक यूनिफाइड लिपिस्तर बनाना भी बोलीविविधता को भाषाई दृष्टि से कम करने का बड़ा कदम होगा। वर्तमान में राजस्थानी विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग लिपिप्रयोग और वर्तनी के कारण और भी बिखरीसी प्रतीत होती है। इसलिए देवनागरी लिपि को राजस्थानी के लिए मूल लिपि या स्वीकृत लिपि के रूप में पहचानना, और उसके लिए यूनिकोड आधारित फॉन्ट, कीबोर्ड लेआउट और टाइपोग्राफिक मानक विकसित करना आवश्यक है। जब स्कूल, विश्वविद्यालय, सोशल मीडिया और ऑनलाइन सामग्री में एक ही लिपि और वर्तनी का प्रयोग बढ़ेगा, तो बोलियों की अलगअलग लिखित विकृतियां घटने लगेंगी, जबकि उनकी विशिष्ट उच्चारण शैली और शब्दावली जीवित रहेगी।

डिजिटल प्लेटफॉर्म भी बोली विविधता को संकुलित करने में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। राजस्थानी वेबसाइट, ऐप, यूट्यूब चैनल, सोशल मीडिया ग्रुप और ऑनलाइन डिबेट मंचों में यदि मानक राजस्थानी को रेफरेंस भाषा के रूप में अपनाया जाए, और अलग–अलग बोलियों के उदाहरण उपटिप्पणियों या टिप्पणियों के रूप में जोड़े जाएं, तो युवा जन स्वयं को एक आम रूप के साथ जोड़ते जाएंगे। राजस्थानी डिजिटल शब्दकोशों में भी अलग–अलग बोलियों के शब्द घटक रूप में दर्ज किए जाएं, लेकिन प्रमुख लेखांतर और व्याख्याएं एक ही मानक रूप में रखी जाएं, ताकि भाषा की आंतरिक विविधता बनी रहे, लेकिन लिखित रूप से भ्रम कम हो।

राज्यस्तरीय नीतियां और संस्थागत भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी जैसी संस्थाएं राजस्थानी व्याकरण मानक संहिता और मानक राजस्थानी शब्दावली जारी कर सकती हैं, जिसके आधार पर स्कूल पाठ्यपुस्तकें, अखबार सहयोगी प्रकाशन, रेडियोटीवी प्रसारण और सरकारी विज्ञापन तैयार किए जाएं। जनकल्याण योजनाओं के प्रचार, हेल्पलाइन सेवा और ग्रामीण प्रशिक्षण सामग्री में भी इस मानक रूप को अपनाने से बोलियों की छाया घटकर एक जुड़ीसी भाषाई छवि बनती जाएगी। इससे भाषा विविधता समझी जाती बोलीशाखाएं रहेगी, न कि असहमति का कारण।

साथ ही बोलीविविधता को नष्ट करने की बजाय उसका वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण भी जरूरी है। राजस्थानी भाषा की अनेक बोलियां लगभग 73 तक गिनी गई हैं, और ऐसा कहा जाता है कि हर दस कोस पर पगड़ी का पेच और बोली में अंतर आ जाता है। इसलिए वोकल और डिजिटल रिकॉर्डिंग, वीडियो, लोकगीत संग्रह, नाटक, उपन्यास और लेखों के माध्यम से विभिन्न बोलियों के उच्चारण, मुहावरे, उपमाएं और लोकविश्वास दस्तावेजित किए जाने चाहिए। इससे न केवल भाषाई विविधता संरक्षित रहेगी, बल्कि इन बोलियों के आधार पर ही भाषाविद मानक रूप का भी समन्वय कर सकेंगे। ऐसी स्थिति में बोलीविविधता भाषा की विलक्षण ताकत बनी रहेगी, न कि इसकी कमजोरी।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

अनावश्यक इजरायल, अमरीका बनाम ईरान युद्ध और नाई की दुकान पर हुई चर्चाएं

महावीर सिंह

पिछले 27 दिन से टीवी चैनल्स पर आधे से अधिक प्राइम टाइम पर इसी युद्ध की चर्चा होती है। सुबह घूमने वालों के समूह हों, पान की दुकान, गांव मोहल्ले हर जगह आम आदमी इस युद्ध पर अपने विचार व्यक्त करता रहता है। समूह जहां होते है वे थोड़े समय में इजरायल अमरीका या ईरान के समर्थन में बोलने लगते है।

नाई की दुकान पर हेयरकट के लिए यह घुमंतू भी ईद वाले दिन गया था। नाई की दुकान पर कुछ लोगों की हेयरकट, हजामत, रंग रोगन लेपने का काम चलता रहता है और 2,4 5 लोग इंतजार करने वाले भी होते हैं। डाई करवाते एक आदमी ने कहा, आज रोजे पूरे हुए, ईद (21 मार्च) है और लड़ाई में यह सुलह हो गई कि आज कोई लड़ाई नहीं होगी तथा जो तेल गैस के जहाज अटके के हैं उन्हें भी सुरक्षित रास्ता दिया जाएगा। भारत के भी कई जहाज आज निकल आएंगे।

दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने पूछ लिया यह घोषणा टीवी पर तो सुनी नहीं? किसने की है! ईरान ने की होगी किंतु इजरायल अमरीका मानेंगे तब न गोलाबारी रुकेगी। अकेले ईरान के हाथ में थोड़े ही है। दूसरा पक्ष गोले बरसाएगा तो ईरान भी करने लग जाएगा।

पहले वाले ने कहा, नहीं न्यूज पक्की है और वैसे भी आज गृह नक्षत्रों की गति,स्थान इस प्रकार बदल रहा है कि अब लगता है शांति हो जाएगी।

तीसरे ने अपनी बात रखी। देखो गृह नक्षत्र का तो पत्ता नहीं किंतु ईरान, अमरीका और इजरायल इस लड़ाई से नाक तक भर चुके,सभी खासा नुकसान झेल चुके बिना किसी की कोई हार जीत के। कोई न कोई बहाना निकाल के सभी पक्ष अपनी अपनी जीत का बिगुल बजाते हुए इस से निकलना चाहते है।

इंतजार करते चौथे ने कहा इस युद्ध में ईरान, इजरायल, अमरीका खासा पिट लिए। फायदे में कोई है तो केवल रूस और चीन हैं। चीन ने तो अपना तेल ,गैस रिजर्व लगभग 200 दिन का कर रखा है, खासा सस्ता खरीद के, ईरान से। रूस भी तेल और गैस का विश्व का दूसरा, तीसरा बड़ा सप्लायर है। युद्ध के कारण,लेने वाले बढ़ रहे है, उन्हें फायदा ही फायदा है। रूस पर यूक्रेन युद्ध के कारण लगाए सारे प्रतिबंध धरे रह जाएंगे। सब को तेल, गैस, पेट्रो उत्पादों की खूब जरूरत है और खड़ी देशों से नॉर्मल सप्लाई बहाल होने में कम से कम 3 से 5 साल तो लगेंगे। यह दोनों देश ईरान को पिन प्वाइंट इंटेलएजेस दे रहे है और उसके आधार पर ईरान मिसाइल हमले कर रहा है। इस वक्त फौज से रिटायर्ड एक वरिष्ठ अधिकारी भी बाल बनवाने आ गए। चर्चा का सार जानकर उन्होंने कहा कि अभी 10 बजे तक तो ईरान द्वार इजरायल पर और खड़ी देशों के अमेरिकन सैनिक अड्डों पर बमबारी हो रही है और उसी प्रकार की कार्यवाही दूसरे पक्ष द्वारा ईरान पर भी की जा रही है। हां यह हो सकता है कि ईरान केवल आज आज के लिए खाड़ी देशों में अमेरिकन सैन्य अड्डों के अलावा अन्य किसी अन्य स्थान पर कोई बमबारी नहीं करे।

इस सैन्य अधिकारी का मानना था कि इस युद्ध का अमरीका का क्या उद्देश्य था अभी स्पष्ट ही नहीं है। ट्रंप हर रोज कोई नई बात कहते है। यदि ईरान की परमाणु बम बनाने की क्षमता नष्ट करना था तो पहली बात तो यह है कि इंटरनेशनल ऑटोमिक एजेंसी के अनुसार ईरान के पास अभी तक यह क्षमता नहीं और इसका कोई प्रमाण भी नहीं कि ईरान के पास एटम बम है। इसके अतिरिक्त अभी कुछ ही महीने पहले भी इन तीनों शक्तियों के बीच युद्ध हुआ था तब इजरायल व अमरीका दोनों का कहना था कि उन्होंने ईरान के पहाड़ों में अंडरग्राउंड परमाणु संवर्धन ठिकानों को बंकर ब्रस्टर बम डालकर नष्ट कर दिया तो अब फिर युद्ध क्यों? इराक में भी खतरनाक विनाशकारी केमिकल हथियार मान कर ही अमरीका में आक्रमण किया था जो उन्हें वहां मिले नहीं। वैसे भी पूर्व राष्ट्रपति ब्रॉक ओबामा के समय 2015 में समझौता हो गया और ईरान ने यह आश्वासन दिया था कि वह परमाणु बम नहीं बनाएगा, उसके संबंधित संस्थान अंतर्राष्ट्रीय निरीक्षण के लिए खुले होंगे। फिर ट्रंप महोदय ने यह समझौता क्यों तोड़ा??

उनका कहना था कि ट्रंप अनेक बार युद्ध के लक्ष्य बदल रहे है, अब भी स्पष्टता नहीं है। युद्ध से बाहर निकलने की कोई पूर्व प्लान भी अमरीका द्वारा तैयार नहीं की गई । इसलिए ऐसा युद्ध कब क्या मोड ले किसी को नहीं पता। अमरीका का एक उद्देश्य ईरान शासन व्यवस्था बदल कर अमरीका परस्त शासन लाना था।इसकी पूर्ति हेतु ईरान की टॉप धार्मिक, शासनिक व सैन्य नेतृत्व की कम से कम पहली पंक्ति नष्ट कर दी किंतु यह बेअसर साबित हुई।जनता ने कोई विद्रोह नहीं किया और न शासन व्यवस्था बदली या न अपने हाथ में ली। एक बार ट्रंप महोदय में कहा कि ईरानी सैन्य क्षमता को इतना नष्ट किया जाएगा कि वह लंबे समय तक खाड़ी देशों व खासकर इजरायल के लिए खतरा न रहे। अमरीका और इजरायल को अभी तक हुए भयंकर वित्तीय व सामरिक हानि के बावजूद ऐसी ग्राउंड स्थिति अभी तक तो हुई नहीं कि ईरान शक्तिविहीन हो गया हो। बल्कि अभी तक अमरीका की वजह से खाड़ी देशों को भयंकर आर्थिक नुकसान ही हुआ है। इसका दुष्प्रभाव इन खड़ी देशों को आने वाले 5,4 साल झेलना पड़ेगा।

इस बीच कुछ लोग चले गए,एक एक दो दो नए जुड़ते रहे।एक रोबीली मूंछों और माथे पर तिलक लगाए सज्जन आ गए। आते ही सारे संयमित वार्तालाप पर कब्जा कर उन्होंने घोषणा की कि इन अरबी लोगों से हिंदुस्तान 7वीं शादी से परेशान है। एक ने कहने का प्रयास किया कि ईरान अरब का भाग नहीं है किंतु उस मूंछों वाले रोबीले व्यक्ति के आगे कोई दूसरी आवाज सुनी ही नहीं जा सकती थी। उन्होंने अपना वक्तव्य जारी रखा। 1192 से 1857 तक तो सीधा–सीधा राज रहा है इनका। निरे मंदिर तोड़े, गरीबों को मुसलमान बनाया, अब अच्छी पिटाई हो रही है। ईरान तो आतंकवादी गुटों को पनपाने वाला सबसे बड़ा मुल्क है। क्या इजरायल को रहने का अधिकार भी नहीं है जो ईरान द्वारा उसे मिटाने की कसम खाई हुई है। इतना कह के वे जय श्री राम का घोष करते हुए, कोई दूसरा ज्यादा अर्जेंट काम ध्यान आगया होगा, सो वे चले गए। बाकी बच्चे लोगों ने चैन की सांस ली।

एक ग्राहक ने कहा, इनको अरब देशों का तेल निकालना है और यहां हम सब का तेल निकलने की नौबत आने वाली है, अगर यह युद्ध लंबा खिंच गया तो। दूसरे ने कहा करे कोई भरे कोई। मुझे 12 मार्च, 26 माउंट आबू की नक्की झील में बोटिंग के दौरान, गुजरात के खेड़ा जिले की दो महिलाओं की बात याद आई''''''न ट्रंप का, न नेतनयाहू का और न ईरान के ख़ोमेनई या जो कोई उसकी जगह हो उनका कुछ भी बिगड़ने वाला है। उनके ऐशो आराम में कोई कमी नहीं आने वाली। मर रहे है गरीब, मजदूर, सामान्य नागरिक और हर तरफ के सैनिक। क्या कसूर है निरीह जनता का??'''' नाव खेने वाले नाविक ने कहा युद्ध समाप्त होने पर अमरीका तो हथियार बेच कर और अरब मुल्कों के पेट्रो डॉलर अपने बैंकों में रख कर अपनी माली हालत ठीक कर ही लेगा। इजरायल को तो अमरीका सैन्य सहायता, आर्थिक सहायता देकर फिर खड़ा कर देगा, बुरी हालत होगी ईरान की। युद्ध लंबा चला तो ईरान में केंद्रीय शासन व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो सकती है। वहां कई उग्रवादी गुट पनपेंगे और ऐसे आतंकी गैंग पूरे मध्यदेशीय क्षेत्र में सरकारों के नाक में दम ला देंगे। जैसा इराक में हुआ है, अफगानिस्तान में हुआ।

नाई की दुकान पर एक आदमी ने टिप्पणी की::–– बाहरी शक्तियों का भारत के छोटे छोटे रजवाड़ों पर कब्जा हुआ क्योंकि समाज जातियों में बंटा हुआ था,राज व्यवस्था पर कुछ सामंतों,पुरोहितों आदि उच्चवर्णीय लोगों का कब्जा था। आम आदमी के लिए सामान्यत केवल हर प्रकार के अत्याचार ही थे। सिवाय कुछ सांस्कृतिक बातों के भारत कभी एक सशक्त राष्ट्र था ही नहीं।

नाई की दुकान पर एक ओर गौर करने वाली बात किसी ने बोली। उसने कहा क्यों जी यह यूएनओ, सुरक्षा परिषद क्या कर रही है? कोई देश सुरक्षा परिषद की बैठक बुलाने की आवाज तक नहीं उठा रहा। कम से कम चीन या रूस तो ऐसा कर ही सकते है। यूएनओ के महा सचिव का भी कोई वाक्य तक नहीं सुना गया?? दूसरे महायुद्ध से पहले लोग ऑफ नेशंस का भी थी हाल था। आज तो एक सबसे शक्तिशाली देश जो चाहे सो उल्टा–सीधा कर रहा है। कही अपने नौकर को, कही अपने घर की नौकरानी को राजा रानी बनाने की बात करता है, कहीं–कहीं बना भी देता है। उसकी नजर में अंतरराष्ट्रीय कानून, संस्थाओं की जीरो अहमियत है। गली का दादा जैसे हर घर के मुखिया को डरा के रखता है वैसा कैसा व्यवहार यह महोदय कर रहा है।

सैलून के हेड मिस्त्री ने कहा देखो सा 15–20 मिनट की चर्चा में बात तो अपने और दूसरों के सारी समझ में आ गई। टीवी चर्चाओं पर वक्ता लोग थोड़े आंकड़े देकर, थोड़ी भाषा की नफासत से यही बातें घुमा–फिरा कर कह देते है। टीवी की बहसें अब नीरस सी लगने लगी। बार–बार वही बातें, किसने किसके थप्पड़ कौन से गाल पर मारे, इसी के चारों तरफ चिल्लपों चलता रहता है।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

सम्मान या समीकरण

अनुराग शुक्ला

राजनीति में संकेत बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, यह तो सब जानते हैं पर राजनीति की अपनी भाषा भी होती है। यह भाषा दल से ऊपर होती है, यह स्वर और सुर दोनों बदल जाते हैं, सदन की सीट बदलते ही।

कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी और सपा के नवाधीश अखिलेश यादव ने कांशीराम जी की हालिया जयंती पर उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न देने की बात की है। इन्हीं भारत रत्न दिलाने का संघर्ष कर रहे दो लड़कों की जोड़ी की सरकारें उत्तर प्रदेश और केंद्र में थीं। उनकी मृत्यु पर एक दिन की छुट्टी तक घोषित नहीं की थी। उत्तर प्रदेश में ना तो तत्कालीन सीएम अखिलेश यादव ने ना ही तत्कालीन केंद्र सरकार के पोस्टर ब्वाय राहुल गांधी को उस समय कांशीराम जी की याद आई। कांशीराम जी को भारत रत्न मिले या ना मिले, ये विवाद और विमर्श का मुद्दा हो सकता है पर समुदाय के लिए बहुत बड़े थे। सिर्फ दलित समुदाय के लिए एक समाज के लिहाज से बहुत बड़ा। समाज तभी आगे बढ़ता है जब सारे वर्ग आगे बढ़ें।

कई बार हर कुछ रुटीन औऱ एक ढर्रे से काम करने को कहा जाता है कि क्या क्लर्क की तरह काम करते हो, कॉपीबुक स्टाइल पर इन्हीं कांशीराम जी ने आम क्लर्क को समाज परिवर्तन के लिए अपना समय, प्रतिभा और धन देने के लिए प्रेरित किया।

डीएस 4 और बामसेफ दोनों संगठन कांशीराम द्वारा वंचित समाज को संगठित करने के लिए बनाए गए थे। डीएस 4 सीधे राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन चलाता था जबकि बामसेफ शिक्षित कर्मचारियों का नेटवर्क बनाकर बहुजन हित के लिए काम करता था।

दलित शोषित संघर्ष समिति यानी डीएस 4 जन आंदोलन की तरह काम करता था। रैलियों, सभाओं और सामाजिक अभियानों के माध्यम से दलितों को जागरूक करता था। जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता था। इसका फोकस था सड़क पर आंदोलन और जनता को संगठित करना।

बामसेफ एससी,एसटी, पिछड़े, अल्पसंख्यक शिक्षित कर्मचारियों को जोड़कर सामाजिक न्याय और समानता के लिए काम करने वाला गैर–राजनीतिक था और कर्मचारियों को सामाजिक चेतना से जोड़ता था। यह शिक्षित वर्ग को संगठित कर आंदोलन को बौद्धिक और संस्थागत आधार देने का काम करता था।

राहुल गांधी ने लखनऊ में कांशीराम जयंती पर इस साल एक कार्यक्रम किया। कार्यक्रम सार्वजनिक था। होर्डिंग लगे, बैनर लगे पर मीडिया को सार्वजनिक कार्यक्रम से बाहर कर दिया। इसी कार्यक्रम ने कहा कि कांग्रेस ने गलती की इसीलिए कांशीराम जी को पार्टी बनाने की जरुरत पड़ी। कांशीराम ने दलितों और वंचितों को आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। नेता प्रतिपक्ष राहुल की भाषा में ही बोलें तो कांशीराम ने ये सारे आंदोलन कांग्रेस की गलतियों का नतीजा था। कांशीराम ने दलितों से जुड़े सवाल उठाए और अंबेडकर जयंती के दिन अवकाश घोषित करने की मांग की। अंबेडकर जयंती पर अवकाश को लेकर वो सारी जिंदगी संघर्ष करते रहे पर सार्वजनिक अवकाश घोषित हुआ 2025 में।

कांशीराम का मानना था कि पूना पैक्ट के बाद दलित राजनीति को कमजोर किया गया। कांग्रेस जैसी पार्टियाँ दलितों को चमचा नेताओं के जरिए नियंत्रित करती हैं, जो जनता के हित में नहीं बल्कि सत्ता के हित में काम करते हैं।1982 में उन्होंने द चमचा एज लिखी जिसमें उन्होंने उन दलित नेताओं की आलोचना की जो कांग्रेस जैसी परंपरागत मुख्यधारा की पार्टी के लिए काम करते है। उन्होंने दलितों को चेताया कि वे चमचा नेताओं के जाल में न फँसें और अपनी स्वतंत्र राजनीतिक ताकत बनाएं। यह किताब बसपा की वैचारिक नींव रखती है।

कांशीराम ने तो राजीव गांधी को संसद पहुंचने से रोकने के लिए 1989 में अमेठी से ललकारा था। परिणाम क्या था इससे महत्वपूर्ण उनका हौसला था। उन्होंने चुनाव के दौरान कहा था "मेरे चुनाव लड़ने से पहले राजीव गांधी अपनी जीत का नतीजा आराम से टीवी पर बैठकर ही सुनता था। मैंने जिस दिन अमेठी में पैर रखा तो राजीव गांधी ने 1 घंटे के लिए भी अमेठी सूनी नहीं छोड़ी। मैंने उसको 4–4 फुट की गलियों में घुमा–घुमा कर मार दिया, जिनमें 24 घंटे ही पानी या कीचड़ खड़ा रहता था। चुनाव में उनकी जमानत जब्त हुई पर उनका बयान ऐतिहासिक बन गया उन्होंने कहा था मैंने आपको दिल्ली मुग़ल–ए–आज़म से दिल्ली का रोड मास्टर बना कर रख दिया है। 1985 में कांशीराम ने जब मायावती को बिजनौर लोकसभा उपचुनाव में उतारा तो राजीव गांधी ने आईएफएस अधिकारी मीरा कुमार को उनका विरोध करने के लिए उतार दिया। पम्मी लालोमजारा की किताब मैं कांशीराम बोल रहा हूं में लिखा है कि मीरा कुमार के उपचुनाव जीतने के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने मीरा कुमार के पिता जगजीवन राम को बुला कर अपमान किया और कहा कि अगर आपके पास व्यक्तित्व होता तो कांग्रेस को आपकी बेटी को जिताने के लिए इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती।

कांग्रेस और कांशीराम के संबंध खटास भरे थे। समाजवादी पार्टी से कांशीराम के रिश्ते खट्टे मीठे रहे। 1991 में वो पहली बार संसद सपा के समर्थन से पहुंचे पर 2 जून 1995 के गेस्ट हाउस कांड के बाद कांशीराम ने मुलायम सिंह यादव के प्रति कड़ी नाराजगी जाहिर की थी, जिसमें उन्होंने मुलायम सिंह को एक "पंचायत स्तर का नेता" बताया था, जिसे उन्होंने मुख्यमंत्री पद तक पहुँचाया था।

सपा औऱ कांग्रेस नेतृत्व की इस पीढ़ी में कांशीराम के प्रति उपजा सम्मान दरअसल सियासत का सीधा समीकरण है। सपा और कांग्रेस दोनों को लग रहा है कि मायावती की यूपी पर सियासी पकड़ कमजोर हो रही है। कांग्रेस दलितों की ओल्ड च्वाइस रही है, वहीं सपा पीडीए की राजनीति के जरिए पिछड़े वोटबैंक का विस्तार दलितों में करने को आतुर हैं। 2024 के चुनाव परिणाम को आधार बनाकर। उनकी सोच है कि अगर मायावती का वोट बिखरा तो उनका सियासी पकड़ मजबूत होगी। वैसे एक दिन सोशल मीडिया परदेखी युवा कवि रामायण धर द्विवेदी की कविता भी याद आ रही है जो इस समय बहुत सामयिक है।

अंधियारे में तीर चलाना छोड़िए,
कठिन लगन से आंख चुराना छोड़िए।
और एक के तीन बनाना छोड़िए,
अगर मगर कर समय बिताना छोडिए।।

–अनुराग शुक्ला,
(लेखक स्वतंत्र पत्रकार)।

'स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को युवा जीवन में उतारें'

बूंदी, (निसं)। शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि देश के युवाओं को स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को जीवन में उतारना चाहिए। गुरुवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण करते हुए मंत्री मदन दिलावर ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि बच्चों को देश विरोधी शिक्षा देने वाली शिक्षण संस्थाओं को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा और उन पर सख्त कार्यवाही की जाएगी। इस दौरान उन्होंने बूंदी के शिक्षकों व शिक्षाविदों द्वारा रचित पुस्तक हाड़ी रानी गमक का विमोचन भी किया।

शिक्षा मंत्री ने छुआछूत और जातिवादी मानसिकता को पूरी तरह खत्म करने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के मंदिर में सभी वर्गों का समान अधिकार है और यहां कोई ऊंचा या नीचा नहीं होता। समाज के पिछड़े और दलित वर्गों को मुख्यधारा में साथ लेकर चलें। साथ ही, देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी उत्पाद खरीदने पर जोर दिया। राजकीय विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली को निजी स्कूलों से बेहतर बताते हुए उन्होंने अभिभावकों से अपने बच्चों का प्रवेश सरकारी स्कूलों में कराने की अपील की। उन्होंने शिक्षकों को भी निर्देश दिए कि वे अपने आचरण को आदर्श बनाएं ताकि बच्चों को संस्कारवान शिक्षा मिल सके। शिक्षा मंत्री ने कहा कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल विद्यालय के भरोसे नहीं दी जा सकती। इसके लिए घर पर भी एक अच्छा शैक्षिक वातावरण होना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे गरीब और पिछड़े तबके से आते हैं, जिन पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे इन बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए उन्हें भावनात्मक और शैक्षिक संबल प्रदान करें।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 27 मार्च, 2026

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, पुनर्वसु नक्षत्र दिन 3:24 तक, अतिगंड योग रात्रि 10:10 तक, कौलव करण दिन 10:07 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:36 से कर्क राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कुम्भ, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–मेष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 3:24 तक है। रवियोग सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। कुमार योग दिन 10:07 से दिन 3:24 तक है। आज नवरात्र समाप्त होंगे। स्वामी नारायण जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:59 तक, लाभ अमृत 7:59 से 11:01 तक, शुभ 12:32 से 2:04 तक, चर 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:37

मेष
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मन:स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं, अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।